46. STRENGTHENING THE STUDENT TEACHER RELATIONS IN THE MODERN SCENARIO

A.RAVI SANKAR SARMA* and Dr A.LAKSHMAIAH#

***Lecturer in Physics, SKP Govt. Degree College, Guntakal,**

#Lecturer in Botany, Govt. Degree College, Pathikonda

Acharya devo bhava – which means teacher, is a living God. After mother and father teacher is given utmost importance in everyone's life .A teacher is a sculptor and shapes the character of the student .The influence of the teacher is permanent, good or bad. This has been a tradition since ancient times

From mythology to date we can quote number of examples which highlight the student teacher relations

Lord Rama – Viswamitra, Arjuna – Dronacharya, Chanakya—Chandragupta, Shivaji— Ramdas,

Ramakrishna-Vivekananda, these are the role models for student teacher relationships.

Coming to present scenario the relation between student and teacher is degrading day by day. The teacher is no more role model and inspiration to the student now .The student teacher relations are not cordial .Following is a some of the reasons for degradation

Degradation of Ethical values in the society

Degradation of moral values in the society in all dimensions also reflected in the student teacher relations. The student has lost respect towards his teacher and in turn the teacher has no concern to the students in most of the cases. The student feels the teacher in no way helpful to his carrier. This is a very serious problem and should be looked into.

Impact of globalization and Privatization

Scanned with CamScanner

Globalization and privatization also lead to introduction of many colleges and Universities .Though the institutions

Which are being run by public funding are inadequate, they are committed to service and social responsibility.

Colleges run by private agencies. Most of them lack commitment and social responsibility. They profit motto

Pure commercial outlook and cannot provide minimum amenities to the students. The teachers are paid meager salaries without providing protection to their service .In such a case we cannot expect commitment in the teachers

And will seriously affect the student teacher relations.

Poor quality of teaching

If the teaching becomes ineffective the student looses interest in learning and in turn it adversely affects the student teacher relations. The teacher has to strive for better relations with the students. A pains taking and committed teacher can maintain cordial relations with the students.

Attitude of the teacher

A teacher is not just a paid servant. Just completion of the syllabus is is not his objective. His attitude towards his profession and students plays an important role in building good relations with the students. Greedy and money minded and non committal nature of teacher can spoil the generations. The likes and dislikes of the student on a Particular subject is a reflection of attitude of that particular subject.

Suggested remedies

Imparting moral Education and Ethics as Mandatory

Nowadays a noncore subject on Human values has been introduced in the curriculum as per the directions of the Supreme Court. This is only a forceful attempt. Because neither the teacher nor the student is interested as both of them feel that they are already overburdened. The student is convinced just by passing the examination as he pays less attention .Therefore it is suggested that burden on the student may be reduced to the possible extent so that he can pay more attention towards ethics.

Making teaching profession Lucrative

Nowadays when compared to other professions teaching profession is less attractive. Most of the talented youth is being attracted towards professions in IT and software fields. Teaching has become an alternative option as there are limited prospects in the carrier . There is less scope for innovation and Career development. Those who choose teaching as profession seek other professions. This is a serious matter of concern. A society with lesser number of teachers is similar to a plane without a pilot, as a teacher is supposed to be a philosopher and guide to the society.Therfore the appointing authorities should be aware of all these aspects .There should scope for innovation creativity and better career prospects in this profession.

Conclusion These are some of the measures suggested to promote better student and teacher relationships. A teacher has no alternative. A robot cannot teach us ethics as this is connected to emotions. Therefore a better student teacher friendly Environment will yield positive results.

Scanned with CamScanner

Indian Multidisciplinary Research Journal
Volume 8, Issue.IV, Nov, 2016
ISSN:2320-7434
Available Online at www.imrj.net

ORIGINAL ARTICLE

शोषित और उत्पीड़ित वर्ग

जी. रामकृष्ण
हिंदी विभाग
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरूपति।

दलित उत्पीड़न का अर्थ है शोषित और उत्पीड़ित, अन्याय और उपेक्षा से ग्रसित जिसकी पीड़ियाँ जूठी पत्तलों से पथ पालने उपेक्षित जीवी के रूप में मसहरी होने की अभिशाप छाया में जीती रही हैं। जिसका मुख्य कारण है निरक्षरता, बदलते हुए युग परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य में व्यापक स्तरपर परिवर्तन आने लगा, जिसका परिणाम दलितों का स्वयं के लिए जागरण हैं, जिसे सामाजिक परिप्रेक्ष में देखा जा सकता हैं।

लेखक कहते है कि आत्मकथा व्यक्ति के जीवन अनुभव और भोगे हुए सत्य का लेख होता हैं। साथ ही उसमे कुछ ऐसा अन्तरंग भी है जो उस आत्मकथाकार के सामाजिक जीवन के दौरान सामने आने से छूट जाता हैं। किन्तु साहित्यकार के जीवन, व्यक्तित्व, उसके परिस्थितियाँ जटिल मानसिक स्थितियों को समझाने के लिए उसका विश्लेषण अत्यावश्यक होता हैं।

दलित साहित्य के अंतर्गत अपनी अभिव्यक्ति को पूर्णतः व्यक्त करने में आत्मकथा सफल विधा हैं। उसमे उन्होंने जो दर्द भरा अपमान जनक जीवन जिया था, जहा पग-पग पर कटोर ताने गालियां थी, उसे उन्होंने हिम्मत के साथ-सबके सामने खोलकर रख दिया।

दलित साहित्य की आत्मकथाओं में लेखकों ने अपनी नारकीय जीवन के दुःख दाह कि खुली तस्वीर को प्रस्तुत किया हैं। हिंदी दलित साहित्य के अंतर्गत सूरजपाल चौहान का स्थान विशिष्ट माना जाता हैं। अपनी दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र, सफाई-देवता, गुसपैटियाँ कहानी संग्रह अब और नहीं कविता संग्रह जूठन आत्मकथा आदि लिखकर हिंदी साहित्य में दलित साहित्य विकास में विशेष योगदान दिया हैं।

दलित साहित्य में आत्मकथा के संदर्भ में सूरजपाल चौहान कि तिरस्कृत आत्मकथा अत्यंत महत्वपूर्ण रचना हैं। इस आत्मकथा में लेखक में लेखक ने उनके आत्मा की तलाश करने की कोशिश की हैं। जिसे सवर्णे ने सदियों से कुछलने का प्रयास करता हैं। इस आत्मकथा में उन्होंने अपनी विपन्न स्थिती पर प्रकाश डालते हुए कहा है, अस्पृश्यता का एक ऐसा महोल की कुत्ते, बिल्ली, गाय, भैंस को छुना बुरा नहीं था, लेकिन यदि छूहड़े का स्पर्श हो जाए तो पाप लगा जाता था, सामाजिक स्तर पर इंसानी दर्जा नही था। वे सिर्फ जरूरत की वस्तु थे। काम पूरा होते ही उपयोग ख़त्म, इस्तेमाल करों, दूर फेको।

तिरस्कृत हिंदी ही नही बल्कि समूचे भारतीय साहित्य की आत्मकथाओं के बीच दहकता दस्तावेज है। तिरस्कृत जातिगत उत्पीड़न और अति दलित समज के संघर्ष का आख्यान है। यह आत्मकथा नहीं अतीत की घटनाओं और पीड़ा दाई अनुभवों से उपजी कराह हैं। जहा लेखक की नहीं समय समाज भी उपस्थित हैं।

तिरस्कृत वर्णित घटनाओं और प्रसंग वर्ण व्यवस्था की निर्ममता के प्रमाण हैं प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश के समय बालक सूरजपाल चौहान तरह तरह से परेशान किया जाता है। प्रवेश परीक्षा के लिए उन्हें तीन दिन तक लगातार झाड़ू लगवाया जाता है। फिर भी उन्हें कक्षा में बैठने का मौका नहीं दिया गया। स्कूल के

दलित आत्मकथाओं में सामाजिक आस्मिता

–जी. रामकृष्णा, एम. ए. (पी. एच. डी.)

दलित आत्मकथा दलित साहित्य की एक विशिष्ट विधा के रूप में साहित्यक दर्जा पा चुके है। जबकि हिन्दी के गैर–दलित लेखक की आत्मकथाएँ साहित्यक विधा का दर्जा न कर सकी है। मराठी दलित लेखकों और आलोचकों में आत्मकथा, आत्मचरित्र, आत्मवृत्त और स्वकथन आदि शब्दों को लेकर उनकी विशिष्टताओं को उजागर किया है। उन्हे आत्मकथा में आए 'आत्मा' और कथा शब्दों पर घोर आपत्ती है। डॉ. अम्बेडकर की दृष्टि में 'आत्मा' शब्द कर्म सिद्धांत का परिचायक लगता है। जो वर्ण व्यवस्था को सैद्धान्तिक आधार देकर जातिवाद के ही मजबूत करता है। यह 'गीत' का ऐसा विलक्षण दर्शन है जो दलितों के सामाजिक, आर्थिक शोषण को सैद्धान्तिक आधार देता है। इस तरह 'आत्मा' शब्द दलितों के शोषण की केंद्रवर्ती आधारशिला बन जाता है।

मराठी दलित साहित्य में आत्मवृत्त लेखन की शुरूआत गंगाधर पानतावणे द्वारा संपादित पत्रिका 'अस्मितादर्श' १९७६ में निकला। इस प्रकाशित आत्मकथ्थों के बाद से मनि है। जिसमें मराठी के प्रसिद्ध दलित लेखकों के 'मैं और मेरा जीवन' शीर्षक से संक्षिप्त आत्मकथा प्रकाशित हुए थे। दलित साहित्य में आत्मवृत्त लेखन की शुरूआत प्रसिद्ध लेखकों के विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित आत्मकथ्थों के बाद ही हुई। सबसे पहले डॉ. अम्बेडकर द्वारा लिखा गया था जो ''मेरा जीवन'' प्रकाशित हुआ। सभी दलितों ने अपने जीवनगत अनुभवो को पहले–पहल आत्मकथ्थों के रूप में अभिव्यक्त हुआ।

दलित आत्मकथाओं में ''अस्मिता'' का प्रयोग हुआ। 'अस्मिता' शब्द का अर्थ अंग्रेजी में गहूब है यह शब्द हिन्दी में ''पहचान'' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इस प्रकार अस्मिता से आशय 'पहचान' से है। किंतु यह पहचान भी आगे संबंधित

Scanned with CamScanner

[illegible] చదువుకున్నారు. 7వ తరగతిని తాడిపత్రి సమీపంలోని కొండేపల్లిలో చదివారు. 8వ తరగతి పెరుగున ఉన్న కడప జిల్లాలోని జమ్మలమడుగులో పూర్తి చేశారు. 1950 సం॥లో ఇంటర్మీడియట్‌లో తెలుగు మాధ్యమాన్ని ప్రైవేటుగా పరీక్ష రాసి ఉత్తీర్ణులయినారు. తరువాత తన చదువు లక్ష్యసాధనలో భాగంగా 1951-55 వరకు తిరుపతి శ్రీ వేంకటేశ్వర ప్రాచ్య కళాశాలలో నాలుగు సంవత్సరాలపాటు విద్వాన్ పూర్తి చేశారు.

ఉద్యోగం : విద్వాన్ పరీక్షలో ఉత్తీర్ణుడైన వెంటనే 1955 జూన్ 13న గుంతకల్లు శ్రీ జగద్గురు పండితారాధ్య ఉన్నత పాఠశాలలో ఆంధ్రోపాధ్యాయునిగా ప్రవేశించాడు. ఈ పాఠశాలలో అందరికీ ఆదర్శప్రాయుడుగా వుంటూ అయిదున్నర సంవత్సరాల కాలంపాటు ఉద్యోగ బాధ్యతను చక్కగా నెరవేర్చారు. తాను ఉపాధ్యాయుడుగా పాఠాలు చెబుతూనే, వాల్తేరులోని ఆంధ్ర విశ్వవిద్యాలయంలో మెట్రిక్యులేషన్ ఉత్తీర్ణుడు కావడం, రాజమండ్రి పండిత శిక్షణ కళాశాలలో పండిత శిక్షణను సంపూర్తి చేయడం ఆయన విద్యా సముపార్జన తృష్ణకు సాక్ష్యంగా చెప్పుకోవచ్చు.

చిత్తూరులో సంస్కృత భాషా ప్రచారిణి సంస్థవారు నిర్వహించు 'కోవిద' అను పరీక్షలో చిన్నయ్యగారు ఉత్తీర్ణులయ్యారు. గుంతకల్లు శ్రీ జగద్గురు పండితారాధ్య ఉన్నత పాఠశాలలో 1955 జూన్ 13 నుండి ఆంధ్రోపాధ్యాయుడుగా 1961 డిసెంబరు 22వ తేదీనుండి గుంతకల్లు బాలుర పురపాలకోన్నత పాఠశాలలో సుశిక్షిత ఆంధ్రోపాధ్యాయుడిగా ప్రవేశించి, దాదాపు 29 సం॥లు పని చేసి 1990 జూలై 31న పదవీ విరమణ గావించారు.

రచనా ప్రేరణ : సాధారణంగా మనిషి పుట్టి పెరిగిన కుటుంబంనుంచి పెరిగిన వాతావరణ నేపథ్యంనుంచి, పరిచయస్థుల దగ్గరనుంచి వైయుక్తికమూర్తిమత్వం రూపుదిద్దుకొంటుంది.

కుటుంబంలో సాహిత్య వారసత్వం లేకున్నా, కుటుంబ సంస్కారానికి తన ఆలోచనలు తోడై మనిషి ఎదుగుతాడు. సరిగ్గా దాదన చిన్నయ్య జీవితంలో అదే జరిగింది. దాదన చిన్నయ్య సొంత వూరికి అప్పుడప్పుడు పౌరాణికులు వచ్చేవారట. తనకున్న సాహిత్యాసక్తివల్ల వారితో అనుబంధం ఏర్పడింది. ఆ పౌరాణికులు కొన్ని పుస్తకాలిచ్చి చదవమని చెప్పడం, తెలియనివాటికి వాళ్ళే అర్థాలు వివరించి చెప్పడం తంతుగా మారింది. కాబట్టి దాదన చిన్నయ్యకు తొలిగురువులు పౌరాణికులుగా చెప్పుకోవచ్చు. అంతేకాకుండా ఈయనకు [illegible] ఉపాధ్యాయులు [illegible] కూడా [illegible] చిన్నయ్యకు సహకరించినట్లు, కవితో జరిగిన ముఖాముఖిలో తెలిపారు. దాదన చిన్నయ్యకు సంస్కృతం మీద పట్టు కలిగడానికి ఈయనే మొదటి కారకుడు. దాదన చిన్నయ్యకు కూడా ఆయనలాగే రచనలు చేయాలనే తాలి చిరు [illegible] ప్రాయంగా కలిగింది. [illegible] తన మిత్రులతో [illegible] సాహిత్యం తనకు బాగా లాభించిందని ముఖాముఖిలో తెలిపారు. [illegible] రోజులలో హరికథలు, నాటకాలు, సాహిత్య [illegible] [illegible] మిత్రులతోపాటు నాటకమాడిన భాగ్యం

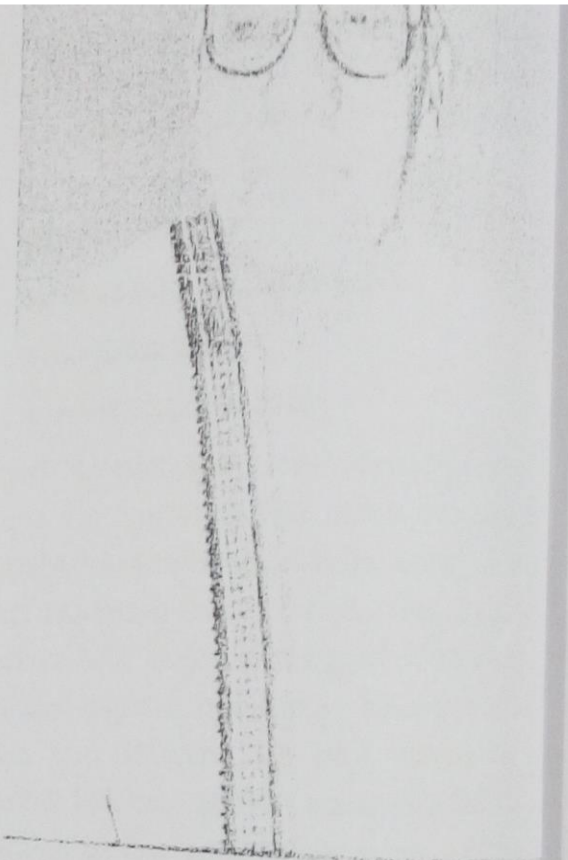

కలిగిన చిన్నయ్యకు ఒక సాహిత్య ప్రేరణగా ఈ మిత్ర [illegible] చెప్పుకోవచ్చు.

సాహిత్య జీవితం : అనంత జిల్లాలో పేరెన్నికగన్న కవులలో [illegible] చిన్నయ్యగారొకరు. విద్యా కల్పతరువుగా, కవికుల గురువుగా, పండిత [illegible] విద్వన్మణిగా అనంత ఆణిముత్యంగా, రాయలసీమరత్నంగా [illegible] శిష్యప్రశిష్యులు పొగుడుతూ వుంటారు. అనేక సాహితీ కార్యక్రమ[illegible] నిర్వహిస్తూ యువ రచయితలను ప్రోత్సహిస్తూ ఎందరినో కవులుగా తీర్చి[illegible] ఘనత ఈయనకే దక్కుతుంది. ఈయన సాహితీ వారసత్వంలో [illegible] సంస్కారమబ్బినవారిలో అవధానులు శ్రీమతి యం. ప్రభావతి, పల్లె లక్ష్మి[illegible] చక్రాల లక్ష్మీకాంత రాజారావుగారు ముఖ్యులు. ఈయనకు [illegible] ఆంజనేయులు, అవధాని ఆచార్య ఆశావాది, ఏలూరి యంగన్న, [illegible] వృషాద్రిపతి, చిత్తూరి రాజశేఖరరావు, వారణాశి శివరామయ్యగారి [illegible] శాస్త్రి మొదలగువారు అత్యంత సన్నిహిత సఖులు.

చిన్నయ్య రచనలు - పరిశీలన : సీమ ప్రాంతమైన అనంత జిల్లానుండి [illegible] మలితరం పద్యకవి దాదన చిన్నయ్య. ఈయన తెలుగు సంస్కృతాల్లో [illegible] గుంతకల్లు పేరి సారస్వత కేంద్రానికి ఆటపట్టు. కవి, శతకకారుడు, [illegible] [illegible] గేయ రచయిత, అనువాదకుడు, సంకీర్తన [illegible] కలంనుండి జాలువారిన 20 గ్రంథాలు సాహితీలక్ష్మిని అలంకరించా[illegible] ఈయన రాసిన శతకాలు మూడు. 1) శ్రీ బళ్ళారి దుర్గాంబికా శతకం, 2) [illegible] ఆంజనేయ శతకం, 3) శ్రీ భరత మాతృశతకం. మూడు కావ్యాలు రాశా[illegible] 1) శ్రీ శ్రీనివాస కళ్యాణం, 2) శ్రీ విజయ భారతం (సర్వసిద్ధ భారత [illegible]

Mary Flannery O'Connor

Dr.K.HANUMANTHAREDDY

Jayalakshmi Publications
140, TPK Main Road,
Vasanthanagar, Madurai - 625 003
Cell: 9865 777 122, 9842 695 695

ISBN 978-93-90203-18-5
9 789390 203185

Scanned with CamScanner

Dr. DASARI RAJESH
Assistant Professor in chemistry
Joginpally BR Engineering College
Bhaskara Nagar, Moinabad, Hyderabdad

Dr.P.RAMESH BABU
Assistant Professor,
Department of Chemistry,
S.K.P. GOVERNMENT DEGREE &
PG COLLEGE, GUNTAKAL
Ananthapuramu(District), Andhra Pradesh,

Prof. M. THIRUMALA CHARY
Head Department of Chemistry JNTUH, Hyderabad.
Member of International Society of Heterocyclic Chemistry (ISHC)
Member of Indian Society for Technical Education (ISTE)
Member of Indian Association for Chemistry Teachers (IACT)

Book is available on Amazon, Flipkart, & www.hsrapublications.com

HSRA Publications

A TEXT BOOK OF ENGINEERING CHEMISTRY

A text book of

ENGINEERING CHEMISTRY

Dr. Dasari Rajesh
Dr. P. Ramesh Babu
Prof. M. Tirumala Chary

Scanned with CamScanner

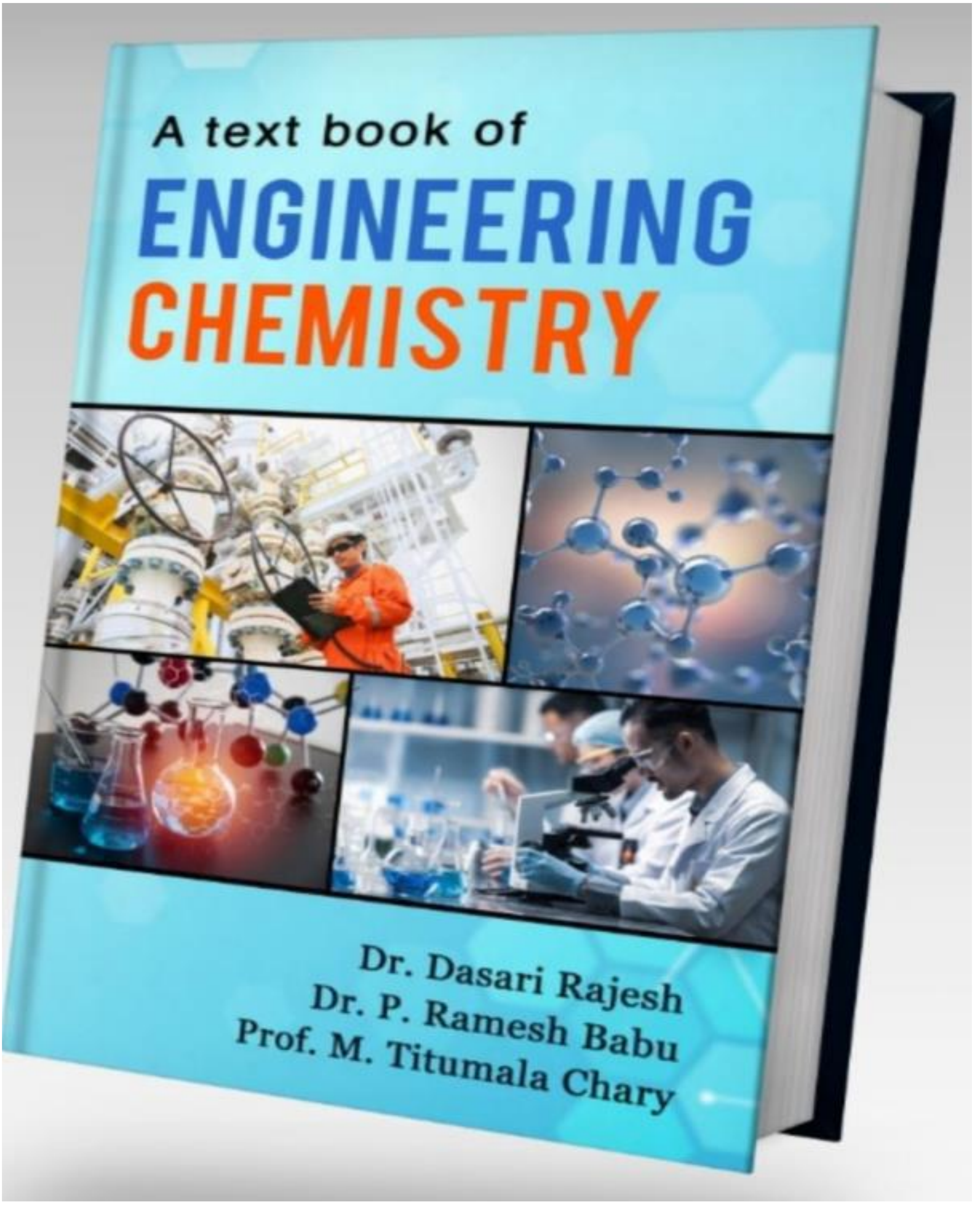

Scanned with CamScanner

Synthesis And Biological Evaluation Of Isoxazole Fused Thiadiazole, Triazole Ring Bearing Thiadiazole - Isothiazolo Pyridine, 2-chloroquinoxaline And Aminothiazole Derivatives

BY
DR S.SHAHINSHAVALI

mp mahi Publication

Scanned with CamScanner

mp mahi Publication

Office No.1, Krishnasagar Society,
Nr. Shivsagar sharda Mandir Road,
Ahmedabad-380007

mahibookpublication@gmail.com
+(91) 798 422 6340
www.mahipublication.com

₹399/-

Scanned with CamScanner